Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **29.08.14** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

हम भागय शाली हैं कि हमें समय समय पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मार्ग दर्शन मिल जाता है। इसलाम की वास्तविकता तथा तक़वा का पता चल जाता है। इन बिखरे हुए मुसलमानों की भांति नहीं हैं जिनको पता ही नहीं चलता कि किसके पीछे चलें। जिनका ग़लत मार्ग दर्शन करके उनके तथाकथित लीडरों तथा धार्मिक पेशवाओं ने उनको एक दूसरे की गर्दनें काटने पर लगा दिया हुआ है।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ न फ़रमाया- आज इन्शाअल्लाह शाम को जमाअते अहमदिया बर्तानिया का जलसा विधिवत आरम्भ होगा। इस प्रकार यह जुम्अः भी जलसे का भाग है। जैसा कि मैं ने पिछले ख़ुत्बः में वर्णन किया था कि जलसा सालाना पर आने वाले मेहमान एक नेक उद्देश्य लेकर आते हैं और वह उद्देश्य यह है कि दीन की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करें, दीन सीखें, रूहानियत में उन्नति करने का प्रयास करें। नेक वातावरण में अपनी प्राकृति नेकी को पहले से अच्छा बनाने का प्रयास करें। दीन को दुनिया पर प्राथ्मिकता देने का जो प्रण हमने लिया हुआ है उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उच्च से उच्चतम रास्तों का मार्ग दर्शन पाकर उनपर चलने का प्रयास करें, बन्दों के हक़ों की अदायगी की ओर पहले से बढ़कर ध्यान दें। अपनी ज़बानों को यादे इलाही से तर करने एंव तर रखने की कोशिश करें। यदि पहले से इसके अनुसार कर रहे हों तो पहले से बढ़कर इसके लिए प्रयास करें, इबादतों की ओर ध्यान दें और उन्हें उस स्तर लाने का प्रयास करें जो स्तर अल्लाह तआला और उसके रसूल हमसे चाहते हैं और वह स्तर यह है जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में बयान फ़रमाया है कि मैं ने जिनों एंव इंसानों की पैदायश का उद्देश्य इबादत निश्चित किया है। फ़रमाता है कि- وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْن अर्थात मैं ने जिनों तथा इंसानों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि- अतः इस आयात के अनुसार इंसान के जीवन का वास्तविक लक्ष्य ख़ुदा तआला की उपासना और ख़ुदा तआला के अस्तित्व का विवेक अर्थात ख़ुदा तआला के लिए हो जाना है। अतः जलसा सालाना में शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह काम होना चाहिए अपनी इस यात्रा को तथा यहां आने के लक्ष्य को केवल इलाही यात्रा और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति का लक्ष्य बनाएं। यदि यह नहीं तो जलसा सालाना के लिए कठिनाई सहकर तथा ख़र्च करके आने वाले इस जलसे के उद्देश्य को पूरा करने वाले नहीं होंगे। अतः यह बड़ा भारी दायित्व है जलसा सालाना में शामिल होने वालों का, और इस दायित्व को अदा करना ही उनके महत्व को बढ़ाता है और इसी लिए उन कार्य कर्ताओं का भी महत्व है, जैसा कि मैं ने पिछले जुम्अः के ख़ुत्बः में वर्णन किया था जो इस नेक काम के करने के लिए, आने वाले मेहमानों की सेवा के लिए अपने आपको पेश करते हैं बल्कि कार्य कर्ताओं का पुण्य एंव महत्व तो इस कारण से दो गुना हो जाता है कि वे ऐसे मेहमानों की सेवा भी कर रहे हैं और साथ ही प्रोग्रामों को सुनकर, इस जलसे के माहौल में शामिल होकर अपनी कार्य शीलता एंव विश्वास को सुन्दर बनाने की बेहतरीन ट्रेनिंग का कैम्प है। अतः इससे पूरा लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करें। इसके लिए अपने पूरा ध्यान एंव शक्ति से इसमें भाग लें। हमने अपने सम्मुख सदैव वे उद्देश्य रखने हैं और रखने चाहिएं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे के विषय में बयान फ़रमाए हैं। आपका जलसे का उद्देश्य अपने मानने वालों को इस रूहानी माहौल में रखकर एक ऐसा नमूना बनाना था जो दुनिया के लिए अनुसरण योगय हो और जिसके पीछे दुनिया चले। आपने फ़रमाया कि मेरे मानने वालों के दिल अख़िरत की ओर पूर्णत्या झुक जाएं अर्थात उन्हें हर समय आख़िरत की चिंता हो। यह कोई छोटा मोटा काम नहीं है, इंसान अपने प्रयास से यह स्तर प्राप्त नहीं कर सकता। हाँ इसके लिए जिस सीमा तक काम हो सकता है, करके फिर दुआआ में लग जाए कि ऐ अल्लाह, दुनिया की समस्याएं तथा रोकें क़दम क़दम पर मेरे मार्ग में रुकावट बने खड़े हैं तू अपने फ़ज़्ल से मुझे उस रास्ते पर चला दे जो तेरी प्रसन्नता का रास्ता है। मेरे दिल में अपना भय ऐसा भर दे जो एक प्यारे और अपने प्रेमी के लिए होता है। किसी अत्याचार के कारण वह भय नहीं होता बल्कि प्रेम के कारण होता ह। कहीं मेरा कोई कर्म तेरी क्रोध का कारण न बन जाए। मेरा प्रत्येक क़दम उन नेकियों की ओर उठे जिनके करने का तू ने आदेश दिया है। तक़वा पर चलते हुए मैं बन्दों के हक़ भी अदा करने वाला बनूं और अल्लाह के हक़ को अदा करने की ओर भी मेरा ध्यान हर समय लगा रहे और मैं उस चीज़ को प्राप्त करने वाला बन जाऊँ जो तू ने मेरे जीवन का लक्ष्य ठहराया है अर्थात इबादत, और इबादत का भी वह स्तर प्राप्त करने वाला बन जाऊँ जो तू अपने बन्दों से चाहता है। उच्च आचरण में भी एक ऐसा नमूना बन जाऊँ जिसका अनुसरण लोगों के लिए गौरव की बात हो। अतः इस जलसे में शामिल होकर अपनी सोचों के यह धारे बनाने की आवश्यकता

है। अल्लाह तआला का हम पर यह बड़ा उपकार है कि जहां उसने क़ुरआन करीम में हमें इबादतों के तरीक़े बताए, इसके स्तर प्राप्त करने के मार्ग दिखाए। वहीं उच्च आचरण, जिनका सम्बंध बन्दों के हक़ से है, उनका भी मार्ग दर्शन किया। उच्च आचरण की प्राप्ति तथा उसको दिखाना भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जलसे में शामिल होने वालों के लिए अनिवार्य निश्चित किया है। आपने इस स्तर का एक स्थान पर इस प्रकार वर्णन फ़रमाया कि मैं सच सच कहता हूँ कि इंसान का ईमान कदापि दृढ़ नहीं हो सकता जब तक अपने आराम पर अपने भाई के आराम को यथा सम्भव प्राथिमकता न दे। यह कोई छोटा मोटा काम नहीं है, यह स्तर प्राप्त करना कोई सरल बात नहीं है। अनेक हैं जो दूसरों के आराम का ध्यान रखते हैं परन्तु अपने सामर्थ्य के अनुसार यदि अपने आराम को क़ुरबान किए बिना यह ध्यान रख सकें तो रखते हैं। लेकिन यह बहुत कम देखने में आता है कि कोई अपने आराम पर दूसरों के आराम को प्राथिमकता दे। ख़ून के रिश्तों में भी लोग कई बार ऐसी क़ुरबानी दे देते हैं कि अपने आराम को क़ुरबान कर देते हैं। परन्तु बहुत कम लोग ऐसे होते हैं। और हर एक के लिए इस स्तर की क़ुरबानी बड़ी कठिन है। बल्कि दूसरों के आराम के सम्बंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फ़रमाया कि दूसरों की कठिनाई को जब तक अपनी कठिनाई की भाति नहीं समझते, वास्तविक मोमिन नहीं बन सकते। ये शब्द मेरे हैं, भावार्थ यही है। आपने फ़रमाया कि यदि मेरा बीमार भाई कठिनाई में है और मैं आराम से सो रहा हूँ तो मेरी हालत पर खेद है। मेरा कर्तव्य बनता है कि जहां तक मेरा बस चले उसके आराम के साधन पैदा करने का प्रयास करूं। यदि काई दीनी भाई अपनी क्षीण मानसिकता के कारण मुझे अपशब्द कहे तो तब भी मेरी स्थिति पर खेद है कि मैं जान बझकर उसके साथ कठोर व्यवहार करूं। मेरा काम यह है कि मैं संताष ज़ाहिर करूं और उसके लिए रो रोकर दुआ करूं कि यह रूहानी रूप से रोगी है, अल्लाह तआला इसका उपचार करे। अतः यह वह स्तर है जिसका अल्लाह तआला ने दीन में, क़ुरआन करीम में आदेश दिया है कि **रोहमाओ बैनुहुम** कि मोमिन आपस में दया की भावना रखते हैं और रहम की भावना के कारण एक दूसरे की कठिनाई को अनुभव करते हैं और कठिनाई का अनुभव करके उसके समाधान का प्रयत्न भी करते हैं और दुआएं भी करते हैं।

अतः हमें अवलोकन की आवश्यकता है कि हममें से कितने हैं जो यह स्तर प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। यदि हम इसके अनुसार कर्म करने लगें तो जितने छोटे बड़े झगड़े हमारे होते हैं, ये सारे समाप्त हो जाएं। हम भागय शाली हैं कि हमें समय समय पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मार्ग दर्शन मिल जाता है। इसलाम की वास्तविकता एंव तक़वा का पता चल जाता है। इन बिखरे हुए मुसलमानों की भांति नहीं हैं जिनको पता ही नहीं चलता कि किसके पीछे चलें। जिनका ग़लत मार्ग दर्शन करके उनके तथाकथित लीडरों तथा धार्मिक पेशवाओं ने उनको एक दूसरे की गर्दनें काटने पर लगा दिया हुआ है। अतः उन लोगों के लिए भी दुआएं करें कि अल्लाह तआला उनको सदबुद्धि प्रदान करे और ये अपनी इन हरकतों के कारण ख़ुदा तआला के प्रकोप क नीचे न आएं। इसलाम का ग़लत रूप दुनिया के सामने रखकर इसलाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बदनाम करने की कोशिश करने वाले न बनें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो अपने मानने वालों की प्रशंसा इन शब्दों में फ़रमाते हैं कि वास्त्व में मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से प्रत्येक मुसलमान तथा हर सलामती देने वाला बिना किसी भेद भाव के सुरक्षित रहे। और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें खोलकर बताया कि वास्तविक मोमिन न केवल अपने बल्कि हर दूसरे धर्म के मानने वाले, वास्तविक मुसलमान से न केवल अपने बल्कि दूसरे धर्मों के मानने वाले भी अमन व सलामती में रहते हैं। क़ुरआन करीम ने जिन उच्च आचरणों का वर्णन फ़रमाया है उनमें से कुछ एक मैं बयान करता हूँ। फ़रमाया, पहली बात, कि क्यूं तुम में उच्च आचरण होने चाहिएं। फ़रमाया كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ कि तुम सबसे बेहतर जमाअत हो जिसे लोगों के लाभ के लिए पैदा किया गया है। तुम नेकी की हिदायत करते हो और बदी से रोकते हो। अतः एक मोमिन की निशानी अथवा उम्मते मुस्लिमा का एक व्यक्ति होने की यह निशानी है कि नेकियों की प्रेरणा देने वाले तथा बदी से रोकने वाले हों, दूसरों को लाभ पहुंचाने वाले हों और हानि से बचाने वाले हों। पिछले दिनों एक सर्वे हुआ कि दुनिया में दान दक्षिणा अथवा चैरिटी देने वाले कौन लोग हैं और विभिन्न धर्मों के मानने वालों के परस्पर निरीक्षण में भी यह बात पता लगी कि मुसलमान दूसरों से बढ़कर दान दक्षिणा करते हैं। यह नेकी है मुसलमानों में दान दक्षिणा के आदेश के कारण। ख़ुदा करे कि ये लोग बाक़ी नेकियां भी अपनाने वाले बन जाएं।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है- दूसरों को स्वंय पर प्राथिमकता दो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जलसे का एक उद्देश्य यह भी है कि जब असंख्य लोग एक स्थान पर एकत्रित हों तो कई प्रकार की आवश्यकताएं पैदा हो जाती हैं तो ऐसे समय में एक अहमदी का यह काम है कि अपनी आवश्यकता को दूसरों के लिए बलिदान करे तथा प्रेम एंव सहानुभूति का नमूना प्रदर्शित करे। न केवल क़ुरबान करे बल्कि उस नमूने में स्नेह एंव बलिदान भी टपक रहा हो। फिर अल्लाह तआला को विनम्रता बड़ी पसन्द है। एक मोमिन को विनम्रता का पाठ पढ़ाया गया है। समाज में अनेक समस्याएं इस कारण से उत्पन्न होती हैं और जब बहुत से लोग एकत्र हों तो कई बार समस्याएं पैदा हो जाती हैं और घमंड इन दुविधाओं के समाधान को रोक रहा होता है। एक अहमदी को तो विशेष रूप से विनम्रता धारण करने की ओर ध्यान देना चाहिए। क्यूंकि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस गुण को विशेष रूप से बड़ा सराहा है और फ़रमाया कि तेरा विनम्रता का मार्ग उसे पसन्द आया। अतः जब हम आपकी ओर सम्बंधित होने का दावा करते हैं तो इन गुणों को अपनाने की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी प्रकार सुन्दर भावनाएं हैं, सत्य का पालन है, सच्चाई का प्रदर्शन है और हर हालत में सत्य का प्रदर्शन आवश्यक है। बल्कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सत्य का ऐसा स्तर हो तथा न्याय का ऐसा स्तर हो कि यदि अपने विरुद्ध अथवा अपने प्यारों के विरुद्ध भी बात जाती हो तो करो, परन्तु सत्य को कभी हाथ से न जाने दो। क्षमा करना है, धैर्य रखना है। ये सब प्रकार

की नेकियां हैं जो हमें अपनाने का प्रयत्न करना चाहिए और इनका प्रदर्शन ऐसे अवसरों पर ही होता है जब बहुत से लोग एकत्र हों और कुछ ऐसी बातें हो जाएं जिनके कारण इंसान के आचरण का पता चलता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों को क़ुरआन करीम की शिक्षा के प्रकाश में विशेष रूप से इनको अपनाने का आदेश दिया है। फिर न्याय एंव उपकार के स्तर प्राप्त करने की ओर ध्यान दिलाया है और न्याय एंव उपकार के जैसे स्तर क़ुरआन करीम ने क़ायम फ़रमाए हैं अन्य किसी किताब ने नहीं फ़रमाए कि दुश्मन की दुश्मनी भी तुम्हें न्याय एंव इंसाफ़ से न रोके। ये हैं वे स्तर जो इसलाम की विशेषता है और एक मुसलमान की विशेषता है और होनी चाहिए और इन सारी नेकियों को अपनाने का हमें आदेश दिया गया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जलसे में अधिक मात्रा में लोग आते हैं तो फिर वे उच्च स्तरीय आचरण की अदायगी का वास्तविक रंग में प्रदर्शन करें और उच्च आचरण की अदायगी का तभी पता चलता है जब यह प्रदर्शन हो रहा हो और लोग एकत्र हों और यदि उच्च आचरण का प्रदर्शन हो रहा हो तो हम इसलाम की सुन्दर शिक्षा के पेश करने बन जाते हैं। यही नमूने हैं जो अहमदियत की तबलीग़ का भी कारण बन रहे होते हैं और शुभ आचरण के ये नमूने दिखाना ही एक अहमदी की विशेषता है और होनी चाहिए। बहुत से लोग इन उच्च आचरणों को देखकर ही अहमदियत की ओर आते हैं। आप में से भी कई होंगे जिनके पूर्वज जलसे की बरकतों के कारण जमाअते अहमदिया में शामिल हुए। अभी दो महीने पहले जर्मनी में भी एक जलसा हुआ उसमें एक ग़ैर मुस्लिम जोड़ा, मियां बीवी एक पड़ौसी देश से आए हुए थे जो इसलाम के विरोधी भी थे या इसलाम का अच्छा प्रभाव नहीं था उन पर, अहमदियों से कुछ परिचित थे। उन्होंने कहा कि जाकर देखें अहमदी बड़ा शोर मचाते हैं कि इसलाम बड़ा शांति प्रिय तथा सलामती वाला धर्म है। देखते हैं कि इसमें सत्य क्या है? उनकी अधिक तर नीयत यही थी कि जाकर आपत्ति करेंगे और कोई प्रभाव नहीं लगे। परन्तु जलसे के माहौल को देखकर, इसके बाद उनसे भेंट भी हुई, उनकी ऐसी दशा बदली कि उन्होंने बअत कर ली। कुछ ऐसे भी होते हैं जो यह कहते हैं कि जब बैअत ली जा रही होती है तो बैअत का दृश्य ऐसी भावना पैदा कर देता है कि इच्छा के बिना, न चाहते हुए भी हम बैअत में शामिल हो जाते हैं। यदि हमारे नमूने विविध हों अथवा हममें से अधिकतर लोगों के नमूने विविध हों तो केवल बैअत का दृश्य उन लोगों को प्रभावित नहीं कर सकता अथवा किसी भी प्रकार की नेकी का अस्थाई दृश्य वह स्थिति पैदा नहीं कर सकता जो दिलों को खींचने वाली हो। इस प्रकार जलसे में शामिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति गुप्त तबलीग़ कर रहा होता है। पिछले जुम्अः को मैं ने कार्य कर्ताओं के बारे में बात की थी कि उनके कर्म गुप्त तबलीग़ का प्रमाण दे रहे होते हैं। परन्तु ये केवल कार्य कर्ता नहीं बल्कि जलसे में शामिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति मुबल्लिग़ होता है, दूसरों को प्रभावित कर रहा होता है। अतः शामिल होने वाले हर एक मनुष्य पुरुष, स्त्री, बच्चे, बूढ़े का कर्तव्य है कि अपने नमूने ऐसे बनाए कि ध्यान आकर्षित करने वाले हों और ये नमूने अस्थाई न हो बल्कि अपनी हालतों में सदा के लिए ऐसी तबदीली अपने अन्दर पैदा करने का हमें प्रयास करना चाहिए जो हमें वास्तव में मुसलमान बनाए। अतः हममें से प्रत्येक को अपने महत्व एंव दायित्व का बोध पैदा करने की आवश्यकता है ताकि हम जलसे से वास्तविक लाभ उठा सकें। उच्च आचरण के प्रदर्शन के विषय में एक मुसलमान को यह भी आदेश है कि सलामती का सन्देश पहुंचाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि تقرءوا السلام على من عرفت ومن تعرف कि हर उस व्यक्ति को जिसे तुम जानते हो अथवा नहीं जानते, सलाम करो। यह एक ऐसा आदेश है तथा नुसख़ा है कि यदि इसपर इसकी रूह को समझते हुए अमल किया जाए तो दुनिया के फ़सादों का समापन हो सकता है। जब एक दूसरे को इंसान सलामती की दुआ दे रहा हो तो प्रश्न ही नहीं उठता कि दिल में ईष्या, घृणा, नफ़रत अथवा घमंड की भावनाएं उभरें। शर्त यह है कि आवाज़ दिल से निकल रही हो। यदि ये बुराइयां न हों तो इस बात भी सवाल नहीं कि समाज में किसी प्रकार का फ़साद हो। अतः सलामती के पैग़ाम को विस्तृत रूप में पहुंचाने की आवश्यकता है और विस्तार इसलाम ने कर दिया है कि केवल अपनों तथा अपने जानने वालों के लिए ही यह पैग़ाम नहीं है बल्कि प्रत्येक को यह पैग़ाम पहुंचा दो। अतः जलसे पर आने वाले हर व्यक्ति को जहां इस बात की पाबन्दी भी करनी चाहिए, ये प्रयास करना चाहिए कि इस माहौल में एक दूसरे पर इतनी सलामती बिखेरें कि पूरा माहौल सलामती बन जाए और हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों तथा सलामती को प्राप्त करने वाले बन जाएं।

कुछ प्रबन्धन सम्बंधो बातें भी मैं वर्णन करना चाहता हूँ जबकि इस विषय में तुलनात्मक रूप से पहले ही पर्याप्त ध्यान है परन्तु फिर भी याद दिलाने के लिए कहना चाहता हूँ। विशेष रूप से वे लोग जिनके साथ बच्चे भी होते हैं कि उनको बहलाने के लिए पुरुष बाहर निकल जाएं और उनको जलसे की कारवाई के बीच, बच्चों की खेलने की अनुमति दें। इस प्रकार तो कभी बच्चों में भी जलसे का सम्मान पैदा नहीं होगा। सात साल के बाद नमाज़ की ओर ध्यान दिलाने की आवश्यकता इस लिए है कि बच्चा होश में आता है। इस लिए उसको बताना चाहिए कि तुम एक उद्देश्य के लिए आए हो तो अभी से सीखो। बचपन से यदि ट्रेनिंग नहीं देंगे तो फिर बड़े होकर भी जलसे की महत्ता कभी क़ायम नहीं रहेगी। फिर यह होता है कि इन बच्चों का बहाना बनाकर बाप भी बाहर फिरते रहते हैं, फिर शिकायतें आती हैं, बच्चे खेल रहे होते हैं और जलसे का एक चिंता जनक प्रभाव पैदा हो रहा होता है। इसी प्रकार प्रत्येक भाषण कर्ता जो भाषण देता है यहां उसका सम्बोधन ज्ञान तथा आध्यात्मिकता बढ़ाने में सहायक होती है। कोई अहमदी भाषण कर्ता क़ुरआन, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कलाम से बाहर कोई बात नहीं करता और यही आज समय की आवश्यकता है। अतः इस बात के महत्व को समझें और जलसे की उपस्थिति को केवल शामिल होकर न बढ़ाएं बल्कि अन्दर बैठ कर, सुनकर इस जलसे से अच्छा लाभ उठाएं। अतः यह भी नहीं कहना चाहिए, कुछ कह देते हैं कि अमुक व्यक्ति का भाषण सुनेंगे और अमुक का नहीं अथवा हमने पहले सुन ली है। ये सारी बातें अनुचित हैं। प्रत्येक सम्बोधन करने वाला

तैय्यारी करके आता है उनकी तक़रीरों को सुनना चाहिए। जलसे पर आए हैं तो जलसे की पूरी कारवाई सुनने का प्रयत्न करें। छोटे बच्चों की माओं के लिए जो अलग मारकी है वहां से भी शिकायत आती है कि बच्चों के शार कम होते हैं और इस बच्चों के शोर के बहाने औरतें आपस में अधिक बातें कर रही होती हैं। इस लिए इस ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। लजना की महिलाओं को भी तथा स्वंय औरतों को भी। यदि औरतें स्वंय चुप हो जाएं तो केवल बच्चों का जो शोर होता है तो उसमें कम से कम अनेक ऐसी औरतें होती हैं जिनके कानों में कुछ न कुछ तक़रीरों की आवाज़ पड़ रही होती है और कुछ न कुछ उनके लिए लाभकारी हो जाता है। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। कार्य कर्ताओं को मैं पुनः याद दिलाना चाहता हूँ जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ अपने दायित्व को निभाने में पूरा ध्यान दें, किसी बात को छोटी न समझ किसी काम को तुच्छ न समझें। सैक्योरिटी वालों के लिए भी जहां एक ओर सुन्दर आचरण है वहीं गहरी नज़र की भी आवश्यकता है, हर वस्तु पर गहरी नज़र रखने की आवश्यकता है। किसी बात को भी हल्की न समझें और सैक्योरिटी कारकुनां के अतिरिक्त भी दूसरे कार्य कर्ता जो हैं वे भी पूर्ण ध्यान के साथ अपने चारों ओर नज़र रखें और इसी प्रकार सभी शामिल होने वाले भी, प्रत्येक अहमदी हमारी सैक्योरिटी है ही, हर अहमदी का भी कर्तव्य है कि अपने माहौल पर नज़र रखे और यदि कोई भी ऐसी ध्यान देने योगय बात देखें तो तुरन्त प्रबन्धकों को सूचित करें। फिर जहां भीड़ का समय होत है, दाख़िले के समय या बाहर निकलते समय कई बार वहां भी बड़े धैर्य एंव तंज़ीम का प्रदर्शन करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार सैक्योरिटी के भीड़ के बीच सैक्योरिटी कान्शंस भी होने की आवश्यकता है। ऐसे अवसरों पर भी कई बार कुछ घटनाएं हो जाती हैं इस लिए बड़ी सावधानी बरतें। फिर शामिल होने वाले डयूटी के कारकुन जो हैं उनकी जो भी हिदायत है, बिना बुरा मनाए, उसे मानें। इस बात पर ध्यान न देते हुए कि हिदायत देने वाला बच्चा है अथवा बड़ा। यदि वह अपना कर्तव्य निभा रहा है तो उसको महत्व दें और उसकी बात मानें। प्रोग्राम जो प्रकाशित हुआ है उसमें भी सारी हिदायतें लिखी हुई हैं। कम से कम बहुत सी हिदायतें लिखी हैं इस लिए उनको पढ़ें भी और उनके अनुसार क्रिया करने का प्रयास करें।

फिर एक शिकायत कई बार यह भी आ जाती है कि बजाए इसके कि जलसे के बाद वर्णन किया जाए पहले ही आवश्यक है कि अपने कार्ड की सुरक्षा तथा उसका उचित प्रयोग हर एक का कर्तव्य है। यह नहीं कि कोई परिचित है उसको अपना कार्ड दे दिया। जिस जिस स्थान पर बैठने और जाने के लिए इस कार्ड की access है वहीं प्रयोग हो सकता है तथा उसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो सकता है। इस लिए अपना कार्ड किसी भी अपने दोस्त या परिचित अथवा निकट सम्बंधी को नहीं देने। जो जिसका कार्ड है वही उसे प्रयोग में लाए। और सबसे बढ़कर यह कि दुआ करें कि अल्लाह तआला इस जलसे को हर प्रकार से बरकत वाला बनाए और जिसकी जितनी जितनी तौफ़ीक़ है वह रोज़ाना सदक़ा भी दे सकता है बल्कि देना चाहिए और दे। अल्लाह तआला इस जलसे को हर प्रकार से बरकत वाला बनाए और हम सारी बरकतें समेटने वाले भी बनें।

KhulasaKhutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 29.08.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा दिनांक 14-15-16 अक्तूबर 2014 दिन मंगल, बुद्ध, जुमेरात को क़ादियान दारुलअमान में आयोजित होगा। इन्शाअल्लाह